Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 3 ~ Issue 8 (2015) pp: 54-57
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

वर्तमान समय में डॉ0 राममनोहर लोहिया के समाजवादी दर्शन के सप्तक्रांति सिद्धांत की प्रासंगिकता

डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह
एसो0प्रो0 – राजनीति विज्ञान
पं0 राम लखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
आलापुर, अम्बेडकरनगर, उ0प्र0

सारांश

आधुनिक भारत के इतिहास में समाजवादी दर्शन के प्रखर नेता के रूप में डॉ0 रामनोहर लोहिया का नाम लिया जाता है। डॉ0 राममनोहर लोहिया पर कार्ल मार्क्स और फ्रेडिक एन्जिल के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। बर्लिन में उन्होंने जर्मन भाषा में कार्ल मार्क्स का साहित्य पढ़ा। वे आजीवन मार्क्स से प्रभावित रहे। उन्होंने मार्क्स वाद को भारतीय परिस्थितियों और संस्कृति के अनुरूप ग्रहण करने का प्रयास किया। गांधी जी की अहिंसा, सत्याग्रह जैसी नीतियों से लोहिया अत्यधिक प्रभावित थे। भाषा, धर्म तथा जाति संबंधी प्रश्नों पर भी दोनों के विचारों में समानता थी। गांधी जी के प्रति अपार श्रद्धा का भाव रखने तथा अनेक मुद्दों पर विचारों की समानता होने के बावजूद लोहिया ने गांधी को पूर्ण नहीं माना। उन्होंने यह विचार व्यक्त किया है गांधी और मार्क्स की सबसे बड़ी कमी यह है कि यह समस्या के एक पक्ष को मानता है और दूसरा समस्या के दूसरे पक्ष को मानता है, तथा अपने दृष्टिकोण के अनुसार सुझाव प्रस्तुत करते हैं। लोहिया ने मार्क्स, गांधी एण्ड सोशलिज्म नामक पुस्तक में मार्क्स और गांधी दोनों के सिद्धांत में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया जिससे दोनों विचारकों के सिद्धांतों को सही दिशा प्रदान की जा सके। लोहिया जी की यही विचारधारा समाजवादी विचारधारा का आधार बन उनके समाजवादी विचारधारा को उनके सप्तक्रांति सिद्धांत के माध्यम से समझ सकते हैं।

लोहिया ने ऐसी पाँच प्रकार की असमानताओं को चिन्हित किया जिनसे एक साथ लड़ने की आवश्यकता –

01. स्त्री और पुरूष के बीच असमानता,
02. त्वचा के रंग के आधार पर असमानता,
03. जाति आधारित असमानता,
04. कुछ देशों द्वारा दूसरे देशों पर औपनिवेशिक शासन,
05. आर्थिक असमानता।

इन पाँच असमानताओं के खिलाफ उनके संघर्ष ने पाँच क्रांतियों का गठन किया। इस सूची में उनके द्वारा दो और क्रांतियों का जोड़ा गया।

06. नागरिक स्वतंत्रता के लिये क्रांति (निजी जीवन पर अन्यायपूर्ण अतिक्रमण के खिलाफ।)
07. सत्याग्रह के पक्ष में हथियारों का त्याग कर अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करने के लिये क्रांति।

ये सात क्रांतियाँ या सप्त क्रांति लोहिया के लिये समाजवाद का आदर्श थीं। व्यवहारिक तौर पर देखा जाए तो इसमें गांधी तथा मार्क्स दोनों हैं। लोहिया जी के विचारों को उनके इन्हीं सप्त क्रांति सिद्धांत के माध्यम से विस्तारपूर्वक देखा जाए तो हम स्पष्ट निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं कि उनका समाजवाद का सिद्धांत सदैव प्रासंगिक है।

01. **स्त्री और पुरूष के बीच असमानता –** डॉ0 लोहिया नर–नारी समानता के प्रबल पैरोकर थे। वे अक्सर स्त्रियों को पुरूष की पराधीनता के खिलाफ आवाज बुलंद करने की हिम्मत देते थे। उनका स्पष्ट कहना था कि स्त्रियों को बराबरी का दर्जा देकर ही एक स्वस्थ और सुव्यवस्थित समाज का निर्माण किया जा सकता है। पुरूषों द्वारा लादी गई नारी की पराधीनता और स्त्रियों द्वारा उसकी सहज स्वीकृति के सख्त विरूद्ध थे। उन्हें कतई पसंद नहीं था कि औरतें घूंघट और पर्दे में रहें और पुरूष समाज उनका शोषण और अनादर करता रहें। वे स्त्रियों को पुरूषों की तरह मुखर व निडर देखना चाहते थे। यही वजह है कि उन्हें ऐसी स्त्रियां पसंद थी जिनमें अपने स्वाभिमान की रक्षा और दमदारी से अपनी बात कहने की ताकत थी। उनका नारी आदर्श द्रौपदी थी जिसने अपने चीरहरण के समय पांडवों की चुप्पी पर सवाल दागा और कौरवों के अत्याचार के विरूद्ध तनकर खड़ी हुई। आज भी हमारे समाज में किसी न किसी रूप से स्त्रियों का शोषण हो रहा है उन्हें समानता का अधिकार नहीं दिया जा रहा है । ऐसी परिस्थिति में लोहिया के सामजवादी सिद्धांत स्त्री–पुरूष की समानता के लिए क्रांति के सिद्धांत को अपनाने की आवश्यकता है जिससे हमारे समाज की बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है। क्योंकि जब तक आधी आबादी को पर्याप्त अधिकार नहीं मिलेंगे तब तक देश के विकास की बात करना या देश में समानता की बात करना बेईमानी होगी।
02. **त्वचा के रंग के आधार पर असमानता –** डॉ0 लोहिया अफ्रीका, अमेरिका और यूरोप में हो रहे अश्वेतों पर अत्याचार को भली–भाँति उदघाटित करते हैं। लोहिया जी ने 1964 में मिसीसिपी, अमेरिका के एक रेस्तरां में नस्लभेद के खिलाफ सत्याग्रह करके गिरफ्तारी दी थी। लोहिया ने लिखा है – ''आज संसार में अफ्रीका जैसे देशों में जिस प्रकार के अत्याचार तथा अन्याय वहाँ के अश्वेतों के साथ किया जा रहा है, वह सम्पूर्ण सभ्यता पर कलंक है। दक्षिण अमेरिका तथा अमेरिका में ऐसी आबादियाँ है, जहाँ गोरे लोगों के बीच काले लोगों का प्रवेश निषेध माना जाता है। अश्वेतों को पूर्णरूपेष मानवाधिकारों से वंचित रखा गया है।'' लोहिया जी के इस कथन से स्पष्ट है कि वे रंगभेद को न सिर्फ भारतीय बल्कि वैश्विक संदर्भों में देखते है। रंगभेद जिस रूप में लोहिया जी के समय था, वैसा ही आज भी विश्व में अपने आपको ढकता–छिपाता निर्लज्जतापूर्वक विद्यमान हैं। भारत में इसका प्रभाव तो नहीं है लेकिन वैश्विक स्तर पर यह समस्या जरूर है अतः इसके समापन के लिए भी हमें लोहिया जी के सप्त क्रांति के मार्ग को अपनाना होगा।
03. **जाति आधारित असमानता –** भारत में जातिप्रथा तथा वर्ण–व्यवस्था के नाम पर जो सामाजिक एवं आर्थिक असमानता हैं, उसे समाप्त करने के लिए क्रांति की जरूरत हैं। आज भी हमारे समाज में किसी न किसी रूप में जाति प्रथा मौजूद है और इस जाति प्रथा का कुप्रभाव समाज के विकास को प्रभावित करता है। डॉ0 लोहिया ने हमेशा ही जाति से ऊपर उठकर एक ऐसे समाज की परिकल्पना की है जिस समाज में सभी एक समान हों यदि वर्तमान भारतीय समाज से जाति प्रथा का दंश खत्म हो जाए तो भारतीय समाज निश्चित तौर पर ऊपर उठेगा अतः हमें इसके लिए भी लोहिया जी के मार्ग पर चलते हुए क्रांति करने की आवश्यकता है।

डॉ0 लोहिया जाति प्रथा के विरोधी थे, उनके अनुसार जाति प्रथा समाजवाद के मार्ग का मुख्य अवरोधक है। जाति समाज में असमानता उत्पन्न करती है। डॉ0 राममनोहर लोहिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है, ''जीवन के बड़े–बड़े तथ्य जन्म, मृत्यु, शादी, भोज ब्याह, और सभी रस्में, जाति के चौखट में होती है। ऐसे मौकों पर दूसरी जाति के लोग किनारे पर रहते हैं, जैसे वे तमाशबीन हौं'' जाति प्रथा के कारण निम्न वर्ग शोषण का शिकार बनते हैं, जाति उन्हें उन्नति के अवसरों से अलग रहती है।

04. **कुछ दे'ाों द्वारा दूसरे देशों पर औपनिवेषिक शासन,** परदेसी गुलामी के खिलाफ और स्वतन्त्रता तथा विश्व लोक–राज के लिए क्रांति पर डॉ0 लोहिया हमेशा जोर देते थे उनका विचार था कि जब तक वैश्विक स्तर पर किसी भी प्रकार के उपनिवेशवाद का प्रभाव रहेगा तब तक संपूर्ण विश्व के कल्याण की अवधारणा सही नहीं होगी। हमें हर स्तर पर समानता लाना होगा जो देश गरीब एवं किसी न किसी औपनिवेशिक शक्ति के गुलाम है उन्हें हर हाल में स्वतंत्रता दिलानी होगी ताकि इससे हर स्तर पर विश्व का कल्याण हो। लोहिया जी का यह विचार आज भी प्रासंगिक है क्योंकि आज वैश्विक स्तर पर उस तरह की गुलामी नहीं है जैसा कि लोहिया जी के समय था। वह साम्राज्यवाद या उपनिवेशवाद का गुलामी का दौर था। वर्तमान में पूंजीवादी नव साम्राज्यवाद की गुलामी के चंगुल में अनेक देश फसते चले जा रहे हैं। जिसके लिए वह किसी ना किसी रूप से मजबूर है ऐसी परिस्थिति में हमें वैश्विक क्रांति के माध्यम से इन पूंजीवादी देशों को रोककर सभी देशों के बीच समानता लाने का प्रयास करना चाहिए।
05. **आर्थिक असमानता –** भूमंडलीकरण में निजी संपत्तियों के केंद्रीकरण को कम करने के लिए डॉ0 राम मनोहर लोहिया की संपत्ति का विकेंद्रीकरण सिद्धांत को अपनाया जा सकता है। डॉ0 लोहिया पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच समानांतर एक समाजवादी विकल्प की स्थापना करना चाहते थे। वे संपत्ति पर समाज के स्वामित्व के पोषक

*Corresponding Author: डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह

थे। लेकिन, संपत्ति का विकेन्द्रीकरण चाहते थे। डॉ0 लोहिया एडम स्मिथ द्वारा किये गये अंर्तराष्ट्रीय श्रम सिद्धांत को अंग्रेजों को फायदा देने वाला सिद्धांत बताते हुए अपने श्रम विभाजन का सिद्धांत दिया था। डॉ0 राममनोहर लोहिया का विचार था कि जब तक समाज में आर्थिक समानता नहीं आएगी तब तक समाज का विकास नहीं हो सकता है अतः हमें मार्क्सवाद के रास्ते पर चलकर समाज में आर्थिक समानता लाने की आवश्यकता है। लोहिया जी के दौर में जिस प्रकार का भारत था उसमें आज थोड़ा बहुत बदलाव हुआ है लेकिन आज भी हमारे समाज में अमीर गरीब के बीच की खाई बहुत बड़ी है अतः हमें इसके लिए भी सप्त क्रांति के मार्ग पर चलकर समानता लाने का प्रयास करना चाहिए।

06. **नागरिक स्वतंत्रता के लिए क्रांति –** नागरिक स्वतंत्रता वह है जो व्यक्ति को समाज और राज्य के सदस्य के रूप में प्राप्त होती। नागरिक स्वतंत्रता की गारंटी राज्य देता है। लोहिया जी के दौर में ही नहीं बल्कि वर्तमान समय में भी हम देखें तो हम पाते हैं कि किसी न किसी रूप से नागरिक स्वतंत्रता उसे निर्बाध रूप से नहीं मिलती है। लोहिया जी ने नागरिक स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए सत्याग्रह के मार्ग पर चलने की सलाह दी है। उनका कथन है कि ''सरकार बदलने के लिए जिंदा कौमें 5 वर्षों का इंतजार नहीं करती।'' अर्थात् सरकार के द्वारा अथवा किसी व्यक्ति के द्वारा यदि उसके नागरिकता संबंधी अधिकार में किसी प्रकार की बाधा पहुंचती है तो ऐसी परिस्थिति में लोहिया जी ने क्रांति करने की सलाह दी है।
07. **सत्याग्रह के पक्ष में हथियारों का त्याग कर अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करने के लिये क्रांति –** लोहिया जी का यह विचार पूर्ण रूप से गांधीवाद से प्रभावित है। उन्होंने मार्क्सवाद के बहुत सारे सिद्धांतों को माना लेकिन उनके समाजवाद में गांधीवाद का अहिंसा का तत्व समाहित है। लोहिया जी भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि दुनिया में हिंसा के बल पर कभी भी कोई लक्ष्य नहीं प्राप्त किया जा सकता है। अतः अहिंसा ही सर्वोत्तम मार्ग है जिसके बल पर लक्ष्य को बड़ी आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान विश्व में देखा जाए तो हिंसा एक बहुत बड़ी समस्या बनकर उभरी है। संपूर्ण विश्व में आज किसी न किसी रूप से लोग हिंसा से ग्रस्त हैं भारत की ही बात की जाए तो भारत में भी हमारे समाज में हिंसा धीरे–धीरे बढ़ती चली जा रही है। ऐसी परिस्थिति में हमें किसी भी आंदोलन को करते समय लोहिया के इस विचार को अवश्य अपनाना चाहिए कि हम किसी भी परिस्थिति में हिंसा की जगह सत्याग्रह का मार्ग अनुसरण करें जिससे हमारे समाज की विविधता बची रहेगी तथा हिंसा से होने वाली समस्याओं से भी छुटकारा मिलेगा।

निष्कर्ष – आज देश में गैर–बराबरी, भ्रष्टाचार, भुखमरी, गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, कुपोषण, जातिवाद, क्षेत्रवाद और आतंकवाद जैसी समस्याएं गहरायी है। यह सही है कि देश तरक्की का आसमान छू रहा है। लेकिन नैतिक और राष्ट्रीय मूल्यों में व्यापक गिरावट के कारण अमीरी–गरीबी की खाई लगातार चौड़ी होती जा रही है। जनवादी होने का मुखैटा चढ़ा रखी सरकारें बुनियादी कसौटी पर विफल हैं। और सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों से निपटने में नाकाम हैं। नागरिक समाज के प्रति रवैया संवेदहीन है। ऐसी परिस्थिति में हमें लोहिया जी के विचारधारा पर चलने की आवश्यकता है। लोहिया जी ने बेहतरीन समाज निर्माण के लिए सत्तातंत्र को चरित्रवान होना जरूरी बताया था। उनका निष्कर्ष था कि सत्यनिष्ठा और न्यायप्रियता पर आधारित शासनतंत्र ही लोक व्यवस्था के लिए श्रेयस्कर साबित हो सकता है। लोहिया भारतीय भाषाओं को समृद्ध होने देखना चाहते थे। उन्हें विश्वास था कि भारतीय भाषाओं के समृद्धि होने से देश में एकता मजबूत होगी।

लोहिया ने नाइंसाफी और गैर–बराबरी खत्म करने के लिए देश के समक्ष सप्तक्रांति का दर्शन प्रस्तुत किया। नर–नारी समानता, रंगभेद पर आधारित विषमता की समाप्ति, जन्म तथा जाति पर आधारित असमानता का अंत, विदेशी जुल्म का खात्मा तथा विश्व सरकार का निर्माण, निजी संपत्ति से जुड़ी आर्थिक असमानता का नाश तथा संभव बराबरी की प्राप्ति, हथियारों के इस्तेमाल पर रोक और सिविल नाफरमानी के सिद्धांत की प्रतिस्थापना तथा निजी स्वतंत्रताओं पर होने वाले अतिक्रमण का मुकाबला इस सप्तक्रांति में लोहिया के वैचारिक और दार्शनिक तत्वों का पुट है जो हर दौर में प्रासंगिक है। भारत में समाजवादी विचारधारा को आधार प्रदान करने में डॉ0 राममनोहर लोहिया का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। लोहिया ने एशियाई समाजवाद का मार्ग प्रशस्त किया है।

*Corresponding Author: डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह

सन्दर्भ सूची :–

01. मुख्तार अनीश, भारतीय समाजवाद के शिल्पी, समाजवादी अध्ययन एवं शोध संस्थान, लखनऊ, 2001, पृ0 144–145।

02. डॉ0 डी0एस0 यादव, प्रमुख राजनीतिक विचारक डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई–दिल्ली। 2012, पृ0 222–223।

03. जीवन मेहता, भारतीय राजनीतिक चिंतन, एस0बी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस, आगरा, 2015, पृ0 197।

04. सुषमा गर्ग, भारतीय राजनीतिक चिंतन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा 2015, पृ0 295।

05. समकालीन राजनीतिक विचारक – डॉ0 वी0सिंह गहलौत अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2000 पृ0 325।

06. ओमप्रकाश गावा, राजनीतिक विचारक – विश्वकोश, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2001, पृ0 186।

07. बी0एल0 फडिया, भारतीय राजनीतिक चिंतन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2008, पृ0 350–351।

*Corresponding Author: डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह